शोध मंथन Vol. XII No.IV Oct.-Dec. 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

चिपको आन्दोलन से सम्बन्धित जन–मनोवृत्तियाँ, समाज में उसका प्रभाव व प्रासंगिकता

प्राप्तिः 01.11.2021
स्वीकृतः 26.12.2021

डॉ० मीरा ठाकुर
शक्ति नगर, चंदौसी
ईमेलः *meerathakur1981@yahoo.com*

सारांश

समाज में चिपको आन्दोलन से सम्बन्धित मनोवृत्तियों से पता चलता है, कि आन्दोलन जन कल्याणकारी आन्दोलन है और श्री चण्डी प्रसाद भट्ट तथा मेरा मानना भी है कि अगर भारत वर्ष की सम्पूर्ण मानव जाति का चिपको को सहारा मिल जाये तो सम्पूर्ण संसार विनाश के मुँह में जाने से बच जायेगा। अगर मानव जाति सरकार और अन्तर्राष्ट्रीय संस्थायें चिपको के साथ कदम से कदम मिला कर चले तो पारिस्थितिकी तंत्र सुधर जायेगा। हाँलाकि देखने में आया है कि पर्यावरण, संरक्षण हेतु जाग्रति सर्वत्र उत्पन्न हुई है और चिपको आन्दोलन से सम्बन्धित जनमनोवृत्तियाँ एवं उनका सामाजिक प्रभाव व प्रासंगिकता को समझने के लिए श्री चण्डी प्रसाद भट्ट जी ने क्षेत्र का भ्रमण सामाजिक घटनाक्रम पर किया जिसमें महिलाओं में एक खासी जागरूकता देखने को मिली है लेकिन सरकार और जनता में चिपको आन्दोलन के प्रति वेरूखी देखने को मिली। जिससे कुछ स्वार्थी लोभी मनुष्यों ने इसके प्रति आक्रोश भी पैदा किया लेकिन आकड़ों को देखने से पता चलता है कि चिपको के प्रति अधिकतर समाज में दिन प्रतिदिन सकारात्मक सोच पैदा हुई।

मुख्य बिन्दु

चिपको आन्दोलन से सम्बन्धित क्षेत्रीय व्यक्तियों की मनोवृत्तियाँ, प्रभाव व प्रासंगिकता महिलाओं व पुरूषों की भागीदारी।

प्रस्तावना

मनोवृत्ति शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है मनो+वृत्ति। अर्थात एक ही बात के बारे में कई सोच एक साथ उत्पन्न होना मनोवृत्ति कहलाती है। चिपको आन्दोलन के सबसे प्रसिद्ध ने श्री चण्डी प्रसाद भट्ट ने ना सिर्फ सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण को ही ध्यान में नही रखा बल्कि वनवासियों को पर्यावरण सन्तुलन का एक मुख्य कारक मानते हुये उनके समन्वित विकास को प्रभावी बनाया और विकास की कार्यनीति इस ढंग से बनाई जानी आवश्यक है जिससे वन कार्य से उनके संबन्ध जुड़ सके। अब लोग भी यह समझ चुके है कि अगर हम चिपको को प्रभावी बनायेगें तो हमारी धरती माता फिर से पुनः हरी भरी हो जायेगी इसलिये इस नग्न पड़ी धरती माता को हरित परत से ढकने के लिये राष्ट्रीय स्तर पर सिर्फ चिपको आन्दोलन की सहायता लेना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। **1.** जन चिपको शुरू हुआ तो दो बातों को खत्म करने की बात रखी गयी कि पहले तो ठेकेदारी प्रथा खत्म की जाये दूसरी बात कच्चे माल का उपयोग खत्म करें क्योंकि इससे बहुत अधिक आर्थिक कमाई होती थी। लेकिन

आगे चलकर महिलायों ने कहा कि पेड़ ना ठेकेदार काटेंगे ना ही ग्रामीण काटेंगे क्योंकि इसके कटने से भूस्खलन को बढ़ावा मिलता है। इसलिये वनो का कटान किसी भी स्तर पर नही होगा वनों के कटान नियंत्रण करने के लिये फिर इस नारे के साथ हुआ चिपको–

''क्या है जंगल के उपकार, मिट्टी पानी और बयार, ये है जंगल के आधार'' अब यह नारा सारी मानव जाति के उत्थान का नारा वन गया। **2.**चिपको आन्दोलन ने पंच जीवन वक्ष खाद्य, चारा, ईधन, जैविक खाद और रेशम प्रजाति के वृक्ष लगाने का मंत्र दिया है। लेकिन अब इस परिवर्तन को कौन लायेगा? सरकार तो लायेगी ही नहीं, इसके लिये सिर्फ धरती माता की सन्ताने को ही पहल करनी होगी। अवश्य ही यह लोग अल्पमत में होंगे लेकिन यह सृजनात्मक अल्पमत होगा। दुनिया के लोग विनाश से सृजन की ओर बड़ रहे है। इसलिये यह नारा, जीवन की जय, मृत्यु की क्षय सर्वमान्य हो। **3.**मनुष्यों के लोभ–लालच में आकर ना सिर्फ वनों को बल्कि वन्य प्रजातियों को भी अनजाने में खत्म करते चले गये। **4.**आज चिपको ने वनों के साथ साथ्ज्ञ वन्य जीव और पक्षियों को भी संरक्षण दिये जाने के लिये अनेक अन्तर्राष्ट्रीय संस्थायों व निष्ठावान व्यक्तियों को तैयार किया है। **5.**पेड़ पौधे व जीव दोनों एक दूसरे के आधार है। अतः इनके लिये जलो के स्त्रोत भी वने रहे। इसलिये हम सोचते है कि प्राकृतिक सौन्दर्य, संसाधनों, जीवों, पशु–पक्षियों, नदियों, वनों आदि का अध्ययन मानवीय आर्थिक दृष्टि से भी होना चाहियें। इसलिये वृद्धो, वयस्को, पौढ़ आदि का सहारा लेकर कुछ प्रयोग सकारात्मक दिशा में किये जाने चाहिये जिनसे विश्वसनीयता को बल मिलेगा। **6.**वृक्षों से मानव जाति को ना सिर्फ खाने–पाने, सिर ढकने की चीजे प्राप्त हुई बल्कि स्वस्थ स्वास्थ्य के लिये आक्सीजन भी प्राप्त हुई है। वनों का संरक्षण अति आवश्यक है। **7.**इसलिये वन पारिस्थितिम्य प्रणाली का विकास सर्वप्राथम्य योग्य है। उपलब्ध वनों का संरक्षण एवं संवर्धन एवं अल्प घनत्व वीरान क्षेत्रों में रोपण कार्यक्रम वृहद स्तर पर लिया जाना होगा। रोपण हेतु प्रजातियों का चयन स्थानीय पर्यावरण के योग्य प्रजातियों में से हुआ। प्रजातियां ऐसी हो जो स्थानीय लोगों के तुरन्त काम में आती हो। रोपण से त्वरित एवं दीर्घकालिक आर्थिक संरचना को संवल तिमला, खडीक, बाज आदि वन लगाने के कार्यक्रम में जन आस्था एवं सहयोग का सरल प्रवाह प्रबन्ध प्रणाली का उद्देश्य बनाया है। शासकीय एवं अशासकीय संस्थायें भी पर्यावरण कि संरक्षण एवं विकास में कार्यरत है। **8.**चिपको आन्दोलन से सम्बन्धित जन मनोवृत्तियाँ एवं उनका प्रभाव व प्रासंगिकता समझने के लिये श्री चण्डी प्रसाद भट्ट के क्षेत्र में समाजिक घटनाक्रम के आधार पर किया। सबसे पहले इस बात को ध्यान में रखा गया कि इस क्षेत्र में चिपको आन्दोलन का क्या महत्व है तथा यह यहाँ कितना कामयाब रहा? तथा कितने लोगों ने इसका अनुगमन किया? इसके आधार पर हमने एक रूप रेखा का निर्माण किया तथा चिपको आन्दोलन से जुड़ा महत्वपूर्ण गाँव 'टंग्सा' जो कि प्रकृति के प्रकोप से प्रभावित व भयभीत है, क्यूणधार का भूस्खलन जिसमें बहुत बड़ी तबाही हुई है, इस समस्या को देखते हुये यहाँ महिलायें पुरूषों की अपेक्षा वक्षारोपण में ज्यादा सक्रिय रही है। इस गाँव में चिपको के पितामह श्री चण्डी प्रसाद भट्ट का स्पष्ट प्रभाव है। चिपको आन्दोलन के प्रति जन मनोवृत्तियाँ व उनका प्रभाव एवं प्रसांगिकता समझने के लिये साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया। एक ही प्रकार की साक्षात्कार अनुसूची द्वारा ''टांग्सा'' (गाँव) तथा गोपेश्वर (नगर) के लोगों की जनमनोवृत्तियाँ एवं प्रभाव व प्रसांगिकता को चिपको के परिप्रेस्य में समझने का प्रयास किया गया। इस साक्षात्कार अनुसूची के द्वारा पुरूषों तथा महिलाओं की सोच की यहाँ पर तुलना की गयी है वहीं दूसरी ओर ग्रामीण व नगरीय जन मनोवृत्तियों व धारणाओं की भी तुलना की गयी है।

निम्नलिखित तालिका (1) के अनुसार 50 प्रतिशत से अधिक ग्रामवासी उत्तर नही दे सके।

तालिका – 1

स्थान	कुल	उत्तरदाता	
		पुरूष	महिला
गोपेश्वर टंग्सा (गाँव)	100 80	40 40	60 40
कुल योग	**180**	**100**	**80**

तालिका (2) के अनुसार 100%महिलायों में से 40%महिलायें बेझिझक बोलने वाली और 60%महिलायें झिझकने वाली है। जिससे पता चलता है कि ऐसी स्थिति में जहाँ महिलाओं को चिपको के प्रति पुरूषों से अधिक सक्रिय बताया, वहीं महिलाओं ने घर से बाहर साक्षात्कार में कम जवाब दिये।

तालिका – 2

स्थान	कुल	बेझिझक महिलायें	झिझकने वाली महिलायें
गोपेश्वर टंग्सा	100 100	40 45	60 45
कुल योग	**200**	**85**	**115**

साक्षात्कार में चिपको आन्दोलन के सम्बन्ध में जन धारणायें एवं मनोवृत्तियाँ को समझने के प्रयास किये गये है।

तलिका 3 के अनुसार गोपेश्वर और टंग्सा में यह जानने की कोशिश की गयी की चिपको आन्दोलन के नाम को कितने लोग जानते है, तो ज्ञात हुआ कि महिलायों और पुरूष की संख्या समान है।

तालिका – 3

	गोपेश्वर		टंग्सा	
	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष
जनकारी व जागरूकता	100 100	100 100	100 100	100 100

जिसमें हमें पता चला कि चिपको से सम्बन्धित जानकारी टंग्सा तथा गोपेश्वर को लोगों को श्री चंडी प्रसाद भट्ट से, स्थानीय लोगों से, समाचार पत्रों व अन्य माध्यमों से मिलती है।

अतः हम देख सकते है चिपको आन्दोलन को सफल बनाने में क्षेत्रवासियों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। चिपको आन्दोलन का समाज पर बहुत प्रभाव पड़ा जो निम्नलिखित है।

1. समाज में नई चेतना पैदा हुई।

2. महिलाओं पर विशेष प्रभाव पड़ा जिससे वे अपनी परम्परागत झिझक को छोड़कर सामाजिक कार्यों में नेतृत्व एवं भागीदारी के लिए साहस के साथ आगे बड़ी।

3. लकड़ी, घास चारा की समस्या के हल के लिये प्रयास प्रारम्भ हुये।

चिपको आन्दोलन से महिलाओं के सामाजिक जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ा। महिलाओं में परम्परागत झिझक दूर करने में चिपको प्रभावकारी है तथा सामाजिक व राजनैतिक कार्यों में नेतृत्व व भागीदारी मुख्य रूप से सामने आयी। चिपको आन्दोलन से पशुओं की स्थिति में सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। पेड़ पौधों की स्थिति में बेहद प्रभावशाली रहा है। लोगों का मानना है कि चिपको आन्दोलन पर्यावरण की दिशा में एक कदम है जिसके प्रभाव को बाद में भी ढंग से देखा जा सकता है। अभी तो यह एक पहल है। वैसे वृक्षारोपण हो रहा है। वृक्षों का कटान पर प्रतिबन्ध प्रभावी हो रहा है। लोग वृक्षों के महत्व को समझ रहे है।

चिपको आन्दोलन के फलस्वरूप जहाँ वनों की सुरक्षा सम्बर्धन एवं पर्यावरण संरक्षण की चेतना प्रबल हुई वहीं पर्यावरण के स्वरूप विकसित पर्यावरण संरक्षण की चिन्ता ने भारत सरकार को पर्यावरण संरक्षण कानून 1980 बनाने के लिये विवश किया।

लेकिन एक और गंदी सोच रखने वाले दलालों और ठेकेदारों अधिकारियों और अवैध तरिके से वनों के कटान से लाभ उठाने वालों ने इसको नगरीकरण, सड़क बनने, टेलीफोन की लाइन बिछाने, बिजली के खम्भे लगाने में चिपको को बाधक माना और इसके प्रति लोगों में समाज में नकरात्मक प्रभाव फैलाया। परन्तु सरकार तथा जनता ने जब यह देखा कि चिपको आन्दोलन से कभी भी किसी विकास कार्यों जैसे स्कूल या सामाजिक स्थान बनाने के लिये कम वृक्षों वाली जगह का कटान कर विकास करने के कभी बाधक नही बना। चिपको आन्दोलनकारी ग्रामीणों की आशाओं आकाँक्षाओं और भावनाओं का पारस्परिक सामंजस्य और ग्रामीण की आशाओं आकाँक्षाओं और भावनाओं का पारस्परिक सामंजस्य और ग्रामीणों के मनोविज्ञान को समझने में बहुत सफल रहे।

कालान्तर में चिपको आन्दोलन में जो दिशा और स्थिति पैदा की है, वह काफी रचनात्मक एवं उत्साहवर्धक है। आन्दोलन द्वारा संचालित की गयी सार्थकता इतनी बड़ी है कि ज्ञान विज्ञान की दुनिया से बहुत दूर आम ग्रामीण पर्यावरण एवं ग्रामीण समुदाय के प्रति रिश्तों को अपनी भाषा में परिभाषित करने लगा है। महिलाओं के प्रति पुरूषों का भी दृष्टिकोण बदला है जो पुरूषों के महिलाओं को बाहर नही निकलने देते थे वे आज महिलाओं को पीछे से सहारा देते है।

महिलाओं ने शराबबन्दी आन्दोलन, खनन आन्दोलन तथा अप्पिको आन्दोलन के साथ समाज में एकता का भाव पैदा किया तथा उससे अन्य महिलाओं को भी प्रेरित किया जो महिलायें घर में दबाकर रखी जाती थी। आज वे पुरूषों से भी आगे बड़ चढ़ कर हर आन्दोलन में भाग लेती है तथा अपने लिये अबला नही सवला बना चुकी है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि समाज में चिपको आन्दोलन को लेकर नाना प्रकार की मनोवृत्तियां देखने को मिलती हैं। श्री चण्डी प्रसाद भट्ट ने चिपको आन्दोलन को प्रभावी बनाने के

लिये ज्यादा से ज्यादा जन कल्याण के बारे में सोचा और लोगों से विनम्र आग्रह करके उन्हें कदम से कदम मिलाकर वनों को तथा पर्यावरण को सुरक्षित करने को चेताया। श्री चण्डी प्रसाद भट्ट जी ने लोगों को बताया कि यदि सम्पूर्ण भारत के व्यक्ति मिलकर चिपको आन्दोलन को आगे बतायेगें तो पूरे विश्व को विनाश का ग्रास बनने से रोक लेगे। रणनीति और लगातार प्रयास से हम अपनी खोई हुई खुशहाली को पुनः हरा भरा कर देंगे। इस कार्य को करने के लिये पहले भी ठेकेदारी प्रथा को तथा कच्चे माल वाले उद्योगों को खत्म करने के लिये प्रयास किये गये, जिसमें महिलाओं का प्रयास काफी रहा। मेरा मानना है कि सरकार तो नहीं लेकिन मानवतावादी, वैज्ञानिकों, युवाओं, कलाकारों हम और आपको ही संघटित होकर चिपको का इतिहास रचना होगा। लेकिन हम यह भी अच्छी तरह जानते हैं कि लोभ–लालच में आकर दुष्ट मनुष्यों ने हमारी वनस्पति बल्कि हमारी वन्य प्रजाति को भी खत्म किया है। स्पष्ट है कि हमें वन्य जाति सुरक्षित करनी है तो हमें वनों की ही सुरक्षित करना होगा। अगर मानव जाति चिपको द्वारा वन संरक्षण हेतु अन्तर्राष्ट्रीय संस्थायों के साथ–साथ कदम से कदम मिलाकर चले तो हमारा पारिस्थितिक तंत्र स्वयं सुधर जायेगा। हालांकि देखने में आया कि जाग्रति उत्पन्न हो रही है और हमारे इतने बिगड़ते वातावरण को बचाने का श्रेय सिर्फ दो मनीषियों श्री चण्डी प्रसाद भट्ट जी और सुन्दर लाल बहुगुणा जी को ही गया है और चिपको आन्दोलन से सम्बन्धित जनमनोवृत्तियाँ एवं उनका सामाजिक प्रभाव व प्रासंगिकता को समझने के लिये श्री चण्डी प्रसाद भट्ट के क्षेत्र का भ्रमण सामाजिक घटनाक्रम के आधार पर किया। जिसमें साक्षात्कार के आधार पर कुछ प्रश्न पर वहाँ के मनुष्यों पर इसका दृष्टिपात देखने को मिला। क्षेत्र में चिपको आन्दोलन के प्रति मनुष्यों का लगाव देखने को मिला जिसमें स्त्रियों की अधिकता बेझिझक पायी गयी। इसका तात्पर्य यह है कि क्या यहाँ पर महिलाओं को दबा कर रखा जाता था। महिलाओं में अधिकतर महिलायें अशिक्षित तथा बेरोजगार भी थी। श्री चण्डी प्रसाद भट्ट को चिपको का मुख्य नेता माना गया। जिसमें हम लोगों की अधिकतर सोच सकारात्मक ही मानी गयी है। इन आन्दोलन का सरकार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। बल्कि उनकी नीतियाँ हमेशा खोखली और कागजी ही दिखायी पड़ी। कहीं कहीं पर तो सरकार ने जनता को भड़काया कि चिपको से सामाजिक कार्य रूक रहे हैं और कुछ जनता भी चिपको से रूष्ट हुई, लेकिन बाद में जब यह पता चला कि चिपको ने कभी भी सूखे वृक्षों को काटने का विरोध वहां किया जहाँ चिपको विरोधी लोगों ने सीधे सरकारी अधिकारियों को गलत ठहराया क्योंकि अधिकारी भी अपने स्वार्थ को लेकर गलत संदेश फैला रहे है क्योंकि उन्हें चिपको के होने से वे वृक्षों से कोई फायदा नही उठा पा रहे है। अतः इससे सिद्ध होता है कि चिपको के प्रति जनमानस की सोच दिन–प्रतिदिन सकरात्मक हुई है।

सन्दर्भ

1. भट्ट चण्डी प्रसाद : पर्यावरण और वन संरक्षण समस्यायें और समाधान, संपादक अतुल शर्मा, पृष्ट 123–124
2. बहुगुणा, सुन्दरलाल : मिट्टी पानी और बयार। ये है जीवन के आधार। सुप्रसिद्ध श्री सुन्दरलाल से बातचीत के आधार पर।
3. पूर्वोक्त
4. बहुगुणा, सुन्दरलाल : विकास और पर्यावरण, पर्यावरण और वन संरक्षण समस्या एवं समाधान, संपादक अतुल शर्मा पृष्ठ 23

5. पैन्यूली, वीरेन्द्र : बीमार पानी, बीमार हवा, बीमार मिट्टी, संपादक–अतुल शर्मा, पृष्ठ–60
6. विष्ट सुजाता : पर्यावरण शिक्षा जरूरी, पर्यावरण और वन संरक्षण समस्या एवं समाधान, संपादक अतुल शर्मा, पृष्ठ–126
7. पूर्वोक्त
8. मेढाणी, गोविन्द प्रसाद : पर्यावरण में संरक्षण और विकास का सामंजस्य लेखक के गाँव के सन्दर्भ में साक्षात्कार।
9. प्रश्न क्षेत्र में कितने पुरूष तथा स्त्रियों ने प्रश्न के उत्तर दिये?
10. महिलाओं में कितनी महिलाओं ने बेझिझक उत्तर दिये?
11. चिपको आन्दोलन कब, क्यों और कैसे शुरू हुआ?
12. चिपको आन्दोलन को लोग नगरी करण में क्यों बाधक मानते है?